अंतरा-शब्दशक्ति

कोशिश

काव्य संग्रह

श्रीमती मधु तिवारी

कोशिश

(काव्य संग्रह)

मधु तिवारी

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-61-2

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अण्डाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © मधु तिवारी

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Koshish' by "Madhu Tiwari'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

कोशिश

मेरी रचना "कोशिश" आज छपने जा रही है जिसके लिए प्रीति जी का बहुत-बहुत आभार....। मुझे बहुत ज्यादा प्रसन्नता है कि मेरा काव्य संग्रह "कोशिश" आप सबके समक्ष प्रस्तुत होने जा रहा है।इस काव्य संग्रह को मैंने कोशिश नाम इसलिए दिया है कि यह मेरा प्रथम काव्य संग्रह है। जिसे मैं कोशिश ही कहना चाहूंगी मेरी इन रचनाओं को पढ़कर आप पाठक गण कैसा महसूस करते हैं ? आप सभी की प्रतिक्रियाओं का मुझे बेसब्री से इंतजार रहेगा। प्रीति जी को मैं पुनः हार्दिक दिल से धन्यवाद देना चाहूंगी। जिनके द्वारा मेरा सपना सकार रूप ले रहा है।

धन्यवाद।

श्रीमती मधु तिवारी रायपुर छत्तीसगढ़।

अनुक्रमणिका

1. देवी शारदा	5
2. बंसी की धुन	6
3. देख चिरैया प्यासी है	7
4. आवाज़	8
5. अराधक	9
6. बचपन	10
7. नाराज़	11
8. प्यारी धरती	12
9. चलन	13
10.शमा	14
11.प्यास	15
12.पाती	16

देवी शारदा

हे शारदे माता वंदन है।
पट श्वेत मस्तक चंदन है।
हृदय मे मेरे बस जाओ,
शत शत मां अभिनंदन है।

वीणापाणी हो तुम माता।
महिमा सुर नर मुनि जन गाता।
वरदायिनी मां ज्ञान दात्री
ज्ञान प्रदान तुझे है भाता।

राम काज सँवारी माता।
रघुकुल को उजियारी माता।
मंथरा कंठ न बैठी होती,
रामा काज नहीं हो पाता।

कर्म तेरा है ज्ञान प्रसार।
पूजे तुझको यह संसार।
मधु मस्तिष्क में बैठो माता,
कर दो अकिंचन का उद्धार।

बंसी की धुन

तेरी बंसी का स्वर तो निराला है।
सुना जो भी हुआ मतवाला है।
करें गिरधर नटवर खटपट ,
सामने देखो भोला भाला है।

सुनी जो राधा हुई बावरिया
कैसी ये बंसी बजाई सांवरिया,
जादू क्या मुरली में डाला है।
सुना जो भी हुआ मतवाला है।

मीरा सुनी तो दीवानी हुई थी
विरह दरद की कहानी हुई थी,
बांसुरी स्वर जो निकाला है।
सुना जो भी हुआ मतवाला है।

कान "मधु" के तरसते रहे हैं
नैना ये निशदिन बरसते रहे हैं,
तेरे प्रेम का पड़ गया पाला है।
सुना जो भी हुआ मतवाला है।

मेरे जीवन की तो चाह तुम्ही हो
जीने का मकसद राह तुम्ही हो,
कैसे हमने खुद को संभाला है।
सुना जो भी हुआ मतवाला है।

देख चिरैया प्यासी है

देख चिरैया प्यासी है।
तू शहरों का वासी है।
बना लिया महल दुमहले,
लगे वीरान उदासी है।

चीं चीं चूँ चूँ धून गजब,
घरों में शोर मचता था।
कितना भी तनाव होता
जन वो सब से बचता था।
सत सुख अब आभासी है।
देख चिरैया प्यासी है।

तरु काट सुविधा जुटाया,
फिर भी तुम बेचैन हो।
चहुँओर फैला प्रदूषण,
खोजा किया अब चैन को।
चैन लगे उपहासी है।
देख चिरैया प्यासी है।

छत में दाना पानी रख,
चिरैया को बुला लो तुम।
आ जाए तो खैर मना,
या सूना अपना लो तुम।
जाते जहां विनाशी है।
देख चिरैया प्यासी है।

आवाज़

आवाज़ सुन मेरी आना तुम।
भवसागर पार लगाना तुम।

द्रोपदी को सखी बनाए थे,
तुम उसकी चीर बचाए थे,
मेरी भी लाज बचाना तुम।
आवाज सुन मेरी आना तुम।

पार्थ को पाठ पढ़ाए थे,
सत्य को विजय बनाएं थे,
मुझे भी गीता सुनाना तुम।
आवाज सुन मेरी आना तुम।

विदुरानी भी भरमाई थी,
केले छिलके को खिलाई थी,
मुझको भी यूं भरमाना तुम।
आवाज सुन मेरी आना तुम।

कुंती में ममता जो जागी,
वह भक्ति में दुखड़ा मांगी,
मुझ में यह भाव जगाना तुम।
आवाज सुन मेरी आना तुम।

अराधक

ऐसे बनूं अराधक, तेरी भक्ति में डूब जाऊं।
धरुँ तेरा ही ध्यान, तेरे चरणों में जगह पाऊं।

राधा रानी थी बड़ी भोली
तेरी भक्ति में वन-वन डोली
न कर पाऊं इतना तो, प्रभु गुण ही तेरा गाऊँ।
ऐसे बनूँ अराधक तेरी भक्ति में डूब जाऊं।

बन गई थी मीरा दीवानी
वीरहा के पीड़ा की कहानी
जो विष नहीं पी सकती,तो भक्तिरस रसना लाऊँ।
ऐसे बनूँ अराधक, तेरी भक्ति में डूब जाऊं।

शबरी ने तो जनम गँवाया
राम को जूठे बेर खिलाया
मुझको भी दर्शन दे दो, मैं आरत वचन बुलाऊं।
ऐसे बनूँ अराधक तेरी भक्ति में डूब जाऊं।

द्रोपदी की भक्ति थी न्यारी
चीर बचाई सखी की प्यारी
सखी कहो नहीं तो भी, तेरी दासी ही कहलाऊं।
ऐसे बनूं अराधक तेरी भक्ति में डूब जाऊं।

बचपन

बचपन होता भोला-भाला।
खेल खिलौना गजब निराला।
छुपा छुपाई गुल्ली डंडा,
बाटी भंवरा खेले लाला।

यादे खूब भुलाई न जाए।
गीले नैन, रुलाई न जाए।
रुकी हुई अधरों पर बातें,
कौन सुने और किसे बताएं।

बचपन के साथी नहीं मिलते।
अब वैसे मुस्कान न खिलते।
नजरें तलाशे हरदम उनको,
दिखा कोई तो पलक न हिलते।

इमली वाली चटकार जहां।
ले चलो मुझे एक बार वहां।
कोई बताए मुझको जरा,
झरबेरी के हैं बेर कहां।

वह कैसी सुंदर यारी थी।
लगती हमे बड़ी प्यारी थी।
कभी रुठे कभी माने हम,
बचपन की दुनिया न्यारी की।

मन पंछी उड़कर वहीं जाएं।
सोंचे वो खुशियां फिर पाएँ।
ढूंढ ढूंढ कर सब साथी को,
फिर से वही महफिल जमाएं।

नाराज़

ओ मेरे साथी! नाराज़ न होना।
प्यार है अनमोल,इसको न खोना।
जिन्दगानी तो,बहुत ही छोटी है,
साथ चले हंसकर तुम न कभी रोना।

कोई गलती हो तो बताना।
नेहा को लगा समझाना।
सब कसमे वादे निभाना।
राग और द्वेष कभी, मन में न ढोना।
ओ मेरे साथी! नाराज़ न होना।

रूठ जाओं कभी तो मनाऊँ।
तेरी भूल भी तुझे भी बताऊं।
क्षमा करके उसको भुलाऊं।
जीवन बगिया की, महक के हर कोना।
ओ मेरे साथी! नाराज न होना।

हम एक गाड़ी के दो पहिए।
एक टूटे तो क्या हो कहिए।
तो संग संग चलते रहिए।
प्यार से बढ़कर न, है चांदी सोना।
ओ मेरे साथी! नाराज़ न होना।

प्यारी धरती

प्यारी धरती, दुर्दशा देखी न जाए।
क्या कर पाऊं तेरे लिए, समझ न आए।

सुनी धरती वन जो कटे
हरियाली का श्रृंगार लुटे
जगह-जगह कचरा से पटे
लोगों में ही, धरती बँटे
कैसे हम सुंदरता तुझको लौटाए।
प्यारी धरती, दुर्दशा देखी न जाए।

पंछी घरौंदा गया बिखर
तेरा घर तो गया निखर
ऐसा हुआ इसका असर
चिड़ियों का उजड़ा बसर
कहो कहां जाकर आश्रय, वे पाएँ।
प्यारी धरती, दुर्दशा देखी न जाए।

सूरज तपता आग उगले
रोते पंछी आह निकले
अब बैठे जन किसके तले
जीव को छाया कैसे मिले
खो रहे सब चैन अब हम कैसे बचाएं।
प्यारी धरती, दुर्दशा देखी न जाए।

चलन

जमाने का चलन, अब यूं बदल रहा है।
मशीन सा मानव, निरंतर चल रहा है।

पहले देव गुरु के,जाते थे शरण में।
झुकाते थे सर, मात पिता के चरण में।
नकारते अब इसको,जो अटल रहा है।
जमाने का चलन अब यूं बदल रहा है।

पति पत्नी के बीच, होता था समर्पण।
एक दूजे के लिए, हो सब कुछ अर्पण।
यहां पर भी अहम का, हो दखल रहा है।
जमाने का चलन अब यूं बदल रहा है।

गैर भी भाव में, खूब बंध जाते थे।
रिश्तो को अपने, प्यार से निभाते थे।
सब पर हावी अब,लोगों का अकल रहा है।
जमाने का चलन अब यूं बदल रहा है।

सीढ़ी बन रहे, अब रिश्ते नाते भी।
करे याद जरुरत में, न तो ठुकराते भी।
बिखरता परिवार वो,जो अचल रहा है।
जमाने का चलन अब यूं बदल रहा है।

शमा

तुम तो शमा जलती ही रहना।
तम न हरुँ, कभी न कहना।

है रोशन करना तेरा धर्म
तू करती जाना अपना कर्म
पर उपकार में रत रहकर,
सरिता की धारा सी बहना।
तुम तो शमा जलती ही रहना।

तभी तू जग से न्यारी है
लगती सभी को प्यारी है
जलते-जलते ढल जाना
अगन को तुम सीने में सहना।
तुम तो शमा जलती ही रहना।

परवाने कई अटकाने
आते राह से भटकाने
कर्म पथ पर चलो सदा ही
कर्म श्रृंगार, कर्म ही गहना।
तुम तो शमा जलती ही रहना।

जब आंधी तूफान आए
शमा तू उससे भी टकराए
कभी नहीं घबराना तुम,
न ही उसके संग बहकना।
तुम तो शमा जलती ही रहना।

प्यास

प्यास मुझे है हरिदर्शन की
ताप हरो प्रभु मेरे मन की
जगत में मन अब लगता नहीं।
कुछ तो करो उपाय अगन की।

मिटा भी दो प्रभु सब जंजाल
भारतवासी रहे खुशहाल
फूल खिलाओ सदा चमन की।
प्यास मुझे है हरिदर्शन की।

ऐसा नीर सदा बरसाना
प्रभु जी जन मन को हरसाना
भक्ति देना अपने चरन की।
प्यास मुझे है हरिदर्शन की।

भारत भूमि, रहे हरियाली
जगत में छाए छवि निराली
बढ़े सदा धुन देश लगन की।
प्यास मुझे है हरिदर्शन की।

इस जग में हो भाईचारा
कलुष मिटे हो मन उजियारा
गंग बहा दो चैन अमन की।
प्यास मुझे है हरिदर्शन की।

पाती

एक पाती तेरे नाम लिखूं, मेरे श्याम कन्हाई जी।
भवसागर से पार करो ,शरण तुम्हारे आई जी।

एक चिट्ठी है उनके नाम,
जो सीमा के रखवाले।
साथ तुम्हारे हम सभी,
कर्म सदा ही करो निराले।

पत्र एक उसको भी लिखूं
देश के जो गद्दार हैं।
बातों से ही समझ जाओ,
वरना जूतों की हार है।

पत्र लिखती हूं गुरुवर,
विनय करूं मैं बारंबार।
अपने ज्ञान आलोक से,
चमका दीजिए ये संसार।

सर्व मात पिता को लिखूं,
बेटा बेटी सम मानो तुम।
भेदभाव से रहना दूर,
जरूरी इतना जानो तुम।

पतिया लिखती नारी को मैं,
जो तुम हुई स्वतंत्र हो।
उसका सद्उपयोग करो,
सोचो न कभी स्वच्छंद हो।

हे रचनाकारों सुनो जरा, सादर "मधुपत्र" अर्पित है।
लेखनी को हित में चलाना, ये देश समाज समर्पित है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती मधु तिवारी

शिक्षा - एम.ए. हिन्दी, अर्थशास्त्र, डी.एड., छत्तीसगढ़ सेट।

पता 1. - विनायक विहार कॉलोनी, दीनदयाल उपाध्याय नगर केन्द्रीय विद्यालय 2 के पास, छत्तीसगढ़ पिन - 492001

2.- ग्राम-पोस्ट - कपसदा, तहसील धमधा, जिला दूर्गा छत्तीसगढ़ , पिन - 492001

कार्यक्षेत्र - शिक्षिका (रायपुर छ.ग.)

- हिन्दी एवं छत्तीसगढ़ी कविताएं, गीत, गज़ल, सजल, भजन, कहानियां, लघुकथाएं लेखन में सक्रिय ..

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-63-6

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com